सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 191

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 39
नवम्बर – 2020

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों

पिछले अंक से आगे...

इस ऊँकार साधना की दीक्षा मुझे मेरे जन्म गावों में भैरवनाथजी ने प्रथमतः प्रदान की। उस दीक्षानुसार मैं पिछले तीन तपों से इस साधना को नित्यरूप से कर रहा था। फिर भी दूसरों के कल्याण के लिये इस ऊँकार साधना की सिद्धता की आवश्यकता का अहसास होने पर इस ऊँकार तत्व को सिद्ध करने के लिये हर पौर्णिमा के दिन, ग्यारह पौर्णिमा तक नरसोबावाड़ी में हवनादि विधि किये गये। और ग्यारहवीं पौर्णिमा के हवनादि विधि के रूप में महारूद्र स्वाहाकार करने पर यह ऊँकार तत्व सिद्ध हुआ। इस तत्व की दीक्षा आप भक्तों को "कारण दीक्षा" के रूप में प्रदान की गई। इस कारण दीक्षा की सिद्धता होकर, उस कारण दीक्षा का महाकारण दीक्षा के रूप में आप भक्तों को लाभ हो, इसलिये श्री गणेश देवता, जिस देवता का मूल आत्मस्वरूप ऊँकारमय है याने अ–उ–म, या उत्पत्ति–स्थिति–लय है। उस देवता को प्रसन्न करवाकर आप भक्तों को महाकारण दीक्षा का लाभ करवा दिया। आप भक्तों ने योग्य वक्त पर जो दीक्षा (उपासना दीक्षा, नामस्मरण दीक्षा, अनुग्रह दीक्षा, गुरू दीक्षा, कारण दीक्षा, महाकारण दीक्षा) प्राप्त की थी, उन दीक्षाओं का एकरूपत्व त्रिगुणात्मक शक्ति में करके उस ऊँकारमय अवथा को बत्तीस शिराला में श्री गोरक्षनाथ जी के चरणों में समर्पित कर उनकी आज्ञानुसार आप भक्तों को नाथ पंथ का "अनुग्रह" प्राप्त करवा दिया। गुरू को जो भी अवस्थाएँ प्राप्त हुई होती है उन्हीं अवस्थाओं का प्रति शिष्यों में धारण होना इसी का मतलब अनुग्रह है। केवल किसी मंत्र को देकर उसका तंत्र उपलब्ध करवा देना याने "अनुग्रह" नहीं। वर्तमान तक हमारा सफर याने हमारा ये जो आत्मिक तत्व है, यह आत्मिक तत्व गुरूचरणों में लीन हो चुका है और वह (आत्मिक तत्व) साकार होकर, अब निराकार हो चुका है। और इसी अवस्था से भविष्य में भक्तों के हाथों जगत कल्याण के लिये हो इसलिये गुरू को प्राप्त अवस्थाएँ भक्तों को साकार करने के लिये जिन साधन पद्धतियों द्वारा भक्तों में गुरू की अवस्थाओं का जो अविश्कार होना आवश्यक है, इसके लिये भक्तमाध्यम को एक ही साधन माध्यम द्वारा साधना करने के लिये सूचित करना आवश्यक होता है। इस वक्त इस

साधना को अन्नमय कोष तक याने ब्रह्मरंध्र तक ले जाकर, उस सूचित साधन का पूर्णत्व भक्तों के ब्रह्मरन्ध्र में करना होता है। क्रमशः इस अवस्था परत्वे जिस वक्त आप भक्तों के देहिक माध्यम द्वारा यह साधना ब्रह्मरन्ध्र में लय अवस्था याने पूर्णत्व प्राप्त करती है, उसी अवस्था को "सहस्त्रदल कमल का उदय" होना कहते है। परन्तु दत्त, नाथ, सूफी पंथानुसार इस अवस्था की प्राप्ति याने देहिक एवं आत्मिक इन दोनों शक्तियों का एकरूपत्व गुरूशक्ति में होकर, इस त्रिगुणात्मक शक्ति के प्रतिक के रूप में ब्रह्मरन्ध्र में धारण करवाना पड़ता है। और आज आपको इस अवस्था की प्राप्ति हो चुकी है। और ये ही अवस्था कृपाशीर्वाद के "शक्तिपीठ" के रूप में आज हमारे काया–वाचा–मन के माध्यम से दूसरों के लिये कार्य करेगी। और इस शक्तिपीठ के स्थान पर जिस काया–वाचा–मन का एकरूपत्व हो चुका है। वहीं गुरूकृपार्शीवाद है। और इसी शक्ति के स्पंद (लहरें) हम भक्तों की वाचा द्वारा उसके आगे बाहर निकलेंगे। इसलिये अब इसके आगे आप जो प्रार्थना करोगे वह प्रार्थना केवल शाब्दिक के रूप में आपकी वाणी द्वारा उच्चरित न होकर, जब आप पूर्ण मनोभावना के साथ प्रार्थना करोगे, उस वक्त इस प्रार्थना द्वाराा उच्चरित किया गया हरेक शब्द दूसरों के कल्याण के लिये शास्त्र, शस्त्र एवं अस्त्र के रूप में आसमंत के अवतावरण कार्यान्वित होकर, आज वातावरण जो कि दूषित विचारोंपरत्वे दूषित हो चुका है वह शुद्ध होकर, उसकी के साथ हरेक कोपरमेश्वर ने बुद्धि नामक अमौलिक अमानत दी है फिर भी "व्यक्ति तितक्या प्रकृति" (हरेक व्यक्ति के अपने भिन्न विचार) इस प्रकार से निर्माण होने वाले बुद्धिमाध्यम के अविचारों के दोषों का भी हमारी नित्यरूप से किये जाने वाली प्रार्थना द्वारा निवारण होगा। भविष्य के इस महान कार्य को श्री गुरू ने कितना आसान और सुलभ करवा दिया है। इसके प्रति भक्तों ने बारीकी से सोचना चाहिये।

आप भक्तों पर इस दूसरों के कल्याणार्थ कहे जाने वाली प्रार्थना को कहने की जिम्मेदारी डाली है। परन्तु उसे पूर्ण करते वक्त, किसी भी कारणवश यदि हमारा काया–वाचा–मन अशांत, असमाधानी या किसी भी विकारों से ग्रस्त होना नहीं चाहिये। आजतक आप भक्तों ने श्रद्धा, भक्ति के साथ अनेक गुरूपौर्णिमा मनाई होगी और श्री गुरू को गुरूदक्षिणा अर्पण की होंगी। परन्तु जिन गुरूओं की सत्ता इस त्रिभुवन पर होती है, उन्हें गुरूदक्षिणा समर्पण करते हो, वह गुरूदक्षिणा न होकर हमारी भक्तिभावना का प्रतिक होता है। परन्तु अब आपको सही 'मायने' में गुरूदक्षिणा देनी है। क्योंकि प्राप्त जन्म एवं भविष्य में प्राप्त होने वाले जन्मों का सार्थक करवाने का सामर्थ्य किसी भी मानव को, किसी भी जन्म में सम्भव नहीं होगा। वह केवल हमारे गुरू की शरण में जाने से ही प्राप्त हुआ है। इसके आगे, भविश्य में अपने जीवन में केवल गुरू आज्ञा का पालन करना इतना ही व्रत आप भक्तों को भविष्य के लिये करना है। और यदि आप भक्त इसकी पूर्तता करोगे तो ही गुरू ने हमारे कल्याणार्थ जो भी कुछ किया है, उसके प्रतिसाद के रूप में आप गुरूपूजन कर गुरूदक्षिणा देने वाले हो, इसी अपेक्षा को भविष्य के लिये रखकर, मैंने आठवें सम्मेलन में सूचित किया है कि इसके आगे आप व्यक्ति के रूप में मेरा पूजन करने के बजाये मेरे माध्यम द्वारा जिस शक्ति ने आपके जीवन को आकार एवं साकार ऐसी अवस्थायें प्राप्त करवा दी है, उस शक्ति की सम्पूर्ण मनोभावना, श्रद्धा भक्ति पूर्वक, पूजा करना मतलब इस शक्ति के प्रति अधिकाधिक पूज्यभाव निर्माण करना और ये ही मुझे आप भक्तों ने अर्पण की हुई "गुरूदक्षिणा" होगी।

गोवा में "साईधाम" वास्तु बांधी गई और उस वास्तु में "गुरू शक्तिपीठ" की स्थापना की गई है। यह आप सभी भक्तभाविकों को विदीत (पता, जानकारी) है। और इस शुभारम्भ में बहुत अधिक प्रमाण में भक्तभाविक उपस्थित थे। गुरू शक्तिपीठ की चिरप्रतिष्ठा गोवा के साईधाम इस वास्तु में की गई है और उस शक्तिपीठ के प्रतिक सारे कार्यकेन्द्र पर दी गई है। इसका भी आपको पता है फिर भी शक्तिपीठ स्थापना की शास्त्रोक्त विधि के बारे में आप सभी भक्तों को जानकारी देना महत्वपूर्ण हैं। मैं स्वयं अपने कल्याणार्थ गुरूआज्ञानुसार कुछ विधि साधनापरत्वे कर रहा हूँ सोचकर आप हरेक कार्य केन्द्र पर रखें शक्तिपीठ प्रतिकों की ओर आदरपूर्वक देखते हो फिर भी गुरूमार्ग में इस प्रकार से शक्तिपीठ स्थापना करने की विधि कितनी मुशिकल है, इसे आपको स्पष्ट रूप से समझना होगा।

आज हम जिस जगत में रहते है, यह जगत ब्रह्माण्ड शक्ति का एक प्रतिक याने "पिण्ड" होकर, ब्रह्माण्डशक्ति जो कि त्रिगुणात्मक शक्ति से युक्त है, ऐसे ब्रह्माण्ड शक्ति द्वारा इस पिण्ड की याने पर्यायवश इस पृथ्वी की देखभाल त्रिगुणात्मक शक्ति द्वारा याने उत्पत्ति, स्थिति, लय इनके द्वारा होती है। इसी पृथ्वी पर हम मानवों का जन्म होता है, याने हम भी उसी ब्रह्माण्ड शक्ति का ही अंश याने "पिण्ड" है। हमारा जन्म होने पर प्राप्त जीवन व्यतीत करने के लिये हमें भी त्रिगुणात्मक शक्ति धारण इस काया–वाचा–मन में करनी पड़ती है। इन त्रिगुणात्मक शक्तियों में से

'उत्पत्ति' इस शक्ति के धर्मपरत्वे हम जन्म लेते है। हम जिस काया को धारण कर जन्म लेते हैं, उस काया में "स्थिति" अवस्थानुसार स्थित्यंतर होकर हमारा देहिक माध्यम इस दुनिया जगत को समझने के लिये समर्थ होता हैं इस प्रकार से यद्यपि दो शक्तियों के सहयोग द्वारा मानव देह की धारण होकर वह देहिक माध्यम कर्मपरत्वे कार्यान्वित होता है फिर भी उस माध्यम की अवविकसितता याने इन दोनों शक्तियों का एकरूपत्व न होने से "लय" धारण नहीं हो पाती। हम जिन दो अवस्थाओं परत्वे जन्म लेते है। और देहिक माध्यम द्वारा जीवन व्यतीत करते है। उस जीवन एवं देह को विकसित करना यह कार्य लय अवस्था का होता है। लय अवस्था याने अंत न होकर, प्राप्त देहिक माध्यम का पूर्णतः विकास याने "अनन्त" (Perfection) ऐसा है। परन्तु बहुजन समाज इस जन्म उत्पत्ति मीमांसा एवं उसके कार्यकारण के बारे में जानते नहीं जिससे उत्पत्ति एवं स्थिति इन दोनों अवसथा परत्वे ही उनका जीवन व्यतीत होता है और इस प्राप्त जीवन का सार्थक याने जीवन के अनन्तरूपी (पूर्णत्व) करने के बजाये इस जीवन का अंत होकर पुनश्च जन्म प्राप्ति का कारण हम ही इसी जन्म में निर्माण करते है। और इस प्रकार से लय अवस्था के अभाव के साथ आज जगत में मानव जीवन में व्यतीत कर रहे हैं, ऐसे व्यक्तियों के जीवन में लय अवस्था के अभाव के कारण जो Gap निर्माण होती है उसके कारण जीवन समतोलता से कार्यान्वित नहीं हो पाता। जिसके कारण हमें यदि आवश्यकतानुसार सुख प्राप्त होने के बावजूद उसका अनुभव लेने में हम असमर्थ होते हैं।

गुरूमार्ग या देवदेवताओं के कृपाशीर्वादार्थ जाने पर हमारे अंदर जिस लय तत्व का अभाव हमारे काया–वाचा–मन में होता है उसके धारण कराने के लिये कृपाशीर्वाद परत्वे लय अवस्था याने शक्ति का संक्रमण हमारे देहिक माध्यम में किया जाता है। परन्तु इस लय अवस्था को भक्तों में प्रथम मुलाकात में ही संक्रमण करना सम्भव नहीं होता, क्योंकि देह के आसपास हमारे आचार–विचारों के वलय धारण हुई होती है। और इस प्रकार से हमारे विचार, विकार, आचारपरत्वे वलय जो कि हमारे अनजाने में ही हमारे आसपास धारण होती है, वे कृपाशीर्वाद के परत्वे लय शक्ति जो कि देह में धारण होने वाली होती है, उसे शक्ति को अपना इष्ट कार्य करने में रूकावट उत्पन्न करती है। इसलिये अलग–अलग दीक्षा प्रदान कर, उसके अनुसार सूचित की गई साधना द्वारा दीक्षांत विधि परत्वे गुरू भक्त के देह के आसपास कवच निर्माण करते है और इस वलय (कवच) का हितसम्बन्ध देह से बन जाये इसलिये आवश्यक सेवा सूचित करते है। दीक्षांत विधि परत्वे गुरूकृपाशीर्वाद का कवच धारण होकर, गुरू शक्ति का संक्रमण करते वक्त, प्रतिकूल वलयों का दुश्परिणाम प्राप्त होने वाले कृपाशीर्वाद पर न हो, ऐसी जो विधि या ऐसी जो सिद्धसिद्धांत पद्धति है, उसे "गुरूदीक्षा" कहते है। केवल किसी व्यक्ति के प्रति पूज्यता महसूस हो रही है या उस व्यक्ति के प्रति आदर व्यक्त करना इसका मतलब हम गुरूमार्गी हो चुके है या हमारा दीक्षांत विधि हो चुका है, ऐसा नहीं। जब गुरूमार्गदर्शनानुसार, परन्तु भक्तों की इच्छानुसार गुरू कार्य नहीं करते, तो वे सामने बैठे भक्त के वर्तमान एवं भविश्य में प्राप्त होने वाले जन्म का अनुसंधान जिस विधिपरत्वे करवा देते है, वह गुरूमार्ग में "अभिवचन" होता है। उनके मुख द्वारा, वाणी द्वारा प्रकट होने वालो शब्दों को आप भक्तों ने "ब्रह्मवाणी" के रूप में श्रवण कर,त्र गुरू के प्रति 100% विश्वास, श्रद्धा, भक्ति सम्पादन करनी चाहिऐ। केवल कार्य केन्द्र पर सूचना लगाये जाते है इसलिये ऐसी दीक्षांत विधियों का लाभ लेने का अंधश्रद्धा एवं अज्ञानता का कार्य आप भक्त अनजाने से भी न करें।

आज दुनिया में हमारे आसपास हम कुछ व्यक्तियों को देखते हैं जिन्हें अपेक्षा से भी अधिक सुख–सम्पन्नता प्राप्त हुई होती है, उन व्यक्तियों को हम नसीबवान समझते है। परन्तु हमारे जीवन में उन सुखों का अभाव किस वजह से हुआ है इसका बोध हमें नहीं हो पाता, इसलिये जो व्यक्ति सुख–सम्पन्न है, उनका यदि दूसरे लोग हेवा, दुस्वास करें तो भी उनकी सुख–सम्पन्नता में बिल्कुल कमी नहीं होगी इसका कारण है कि उन्हें उनके पूर्व जन्म में से किसी एक जन्म में, उनको उनके प्राप्त जन्म का बोध किसी न किसी ने करवाने के कारण जिस लय तत्व के कारण जीवन को पूर्णत्व प्राप्त होता है ऐसे लय तत्व इनके हर जीवन में जुड़ता जाता है। और जब पूर्णतः उत्पत्ति–स्थिति इन अवस्थाओं परत्वे जन्म लेने पर ये दोनों अवस्थाएँ लय तत्व में विलीन होने के कारण उन्हें पूर्णतः लय अवस्था स्वरूप जन्म प्राप्त होता है। और उनकी इच्छानुसार वे इस जन्म में सुख के हिस्सेदार बन जाते हैं इसी अवस्थापरत्वे हम इस जन्म में गुरूमाध्यम के रूप से मुलाकात होती है वह हमारे समान ही मानव देह के रूप में होता है, फिर भी उनके अनेक पूर्वजन्मानुसार जन्मपरत्वे उत्पत्ति, स्थिति अवस्था को लय अवस्था में विलीन कर, जिस लय अवस्था परत्वें यह ब्रह्माण्ड पिण्ड की जोपासना (देखभाल) करता है, उस ब्रह्माण्ड शक्ति से यह व्यक्ति लय अवस्था से एकरूप हुई होती है। और फिर इहजन्म की जो भी व्यक्ति इस लय शक्ति के अभाव में दुःखी

कष्टी होता है, उन्हें अपने देहिक माध्यम द्वारा लय शक्ति का लाभ कृपाशीर्वादपरत्वे करवाकर, उनके दुःखी, कष्टी जीवन को वे सुखावह करते हैं और जब ऐसी अवस्था द्वारा यह कार्य होता है उस वक्त ब्रह्माण्ड शक्ति उस गुरूमाध्यम में अवर्तीण होती है, इसीलिये उन्हें परमेश्वर का "अवतार" कहा जाता है।

जब ब्रह्माण्ड शक्ति का इस प्रकार से पिण्ड से एकरूपत्व होता है, उस वक्त गुरूमाध्यम जगत के दुःखी, कष्टी लोगों के जीवन को सुखावह करने के साधन (निराकरण) निर्माण कर इस जगत को सुख–शांति–समाधान की दिशा प्राप्त कर देते हैं और ऐस वह अवतारकार्य जिस मानव देह के माध्यम से होता है, उसके जीवन परिसर में यह ब्रह्माण्ड शक्ति का वलय उनके अंत तक कार्य करता है। परन्तु जब वो व्यक्ति दिवंगत होता है, उस वक्त जिस देहिक एवं आत्मिक तत्व के एकरूपत्व से ब्रह्माण्ड शक्ति से देहिक माध्यम याने पिण्ड जुड़ा होता है, वह ब्रह्माण्ड शक्ति उनके अंत के पश्चात पुनश्च अपने स्थान पर निराकार हो जाती है। (ब्रह्माण्ड में विलीन)। इस प्रकार से पिण्ड और ब्रह्माण्ड का लेन–देन अनन्तकाल से निरंतर जारी है। आजतक कई अवतारी पुरूषों ने पिण्ड का ब्रह्माण्ड से एकरूपत्व कर अवतार कार्य किया। परन्तु उनके अंत के पश्चात जिस लय शक्ति के माध्यम से उन्होंने इहजगत के कल्याणार्थ ब्रह्माण्ड शक्ति को अवतीर्ण किया, वो ब्रह्माण्ड शक्ति पुनश्च अपने स्थान पर गमन करती है। जिसके कारण अवतारी पुरूषों को लय तत्व जो कि इस क्रिया को करने में समर्थ था, वह आज इहजगत में अवतारी पुरूषों की "समाधि" के रूप में अस्तित्व में हैं और इन शक्ति माध्यमों के सान्निध्य में हमारे जाने पर, हममें जिस लय शक्ति की कमतरता है वह स्वाभाविक रूप से पूर्ण होती है, परन्तु हम वहाँ से प्राप्त हुई इस लय शक्ति का विनियोग ईश्वर से इस जीवन को जोड़ने के लिये न करके अधिकाधिक ऐहिक सुखों की आसक्ति से प्राप्त कृपाशीर्वाद याने लय शक्ति का दुरूपयोग करते है।

जगद्गुरू श्री साईनाथ महाराज जी के कृपाशीर्वाद से इन अवस्थाओं की परम्पराओं को अहसास होने से मैंने जिस लय शक्ति याने कृपाशीर्वाद के माध्यम से पिछले तीस वर्षों से लोककल्याण का कार्य आप भक्तों के लिये किया, उस ब्रह्माण्ड शक्ति की आवश्यकता भविष्य में हम मानवों को इस जगत में सुख–शांति–समाधान निर्माण होने के लिये होगी, इसलिये इस शक्ति को प्रतिकात्मक करने के लिये आप भक्तों के माध्यम से पिछले पांच वर्षों से ऊँकार साधना करवाकर उस ब्रह्माण्ड शक्ति का प्रतिक "गुरूपीठ" के रूप में निर्माण किया। इस गुरूपीठ की स्थापना तक गुरूकृपाशीर्वाद एवं आप भक्तों का सहकार्य इस पीठ को स्थापन करने में कारणीभूत हुआ, फिर भी इस विधि की सांगता तक मैं अत्यंत चिंताग्रस्त था। इसका कारण था कि इस दिव्य को करते वक्त, जिसमें दिव्य शक्ति का समावेश है उसे आह्वान कर उसकी चिरप्रतिष्ठा होने तक यदि यह कार्य सिद्धि नहीं होता है तो, यह शक्ति प्रथमतः आह्वान आह्वान करने वाले साधक का अंत कर, उनके भक्तों के भी जीवन ध्वस्त कर देती है। और इसकी जानकारी अनेक अवतारी सत्पुरूषों को थी इसलिये उन्होंने हम मानवों के कल्याणार्थ इस सिद्धसाधना को नहीं किया।

शेष आगे के अंक में .....

सेवक,

।। शुभं भवतु ।।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible